School of Social Sciences

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "पूर्वी उत्तर प्रदेश में औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष (गाजीपुर जिले के विशेष संदर्भ में 1764 ई0 से 1947 ई0 तक)" **"Puravi Uttar Pradesh Mein Aupaniveshik Samrajyavad ke Viruddh Sangharsh (Ghazipur Jile ke Vishesh Sandarbh Mein 1764 AD Se 1947 AD Tak)"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **" Medieval and Modern History"** under **'School of Social Sciences'** of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2024**.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Prof. Santosha Kumar** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Research Supervisor
Prof. Santosha Kumar
Faculty of Subject - **Medieval and Modern History**

Candidate Name
Shailendra Yadav
En. No.- 2300502

Prof. Santosha Kumar
Director of School of Social Sciences

Prof. P.K. Pandey
Secretary of RDC/ Director, R&D Cell

"पूर्वी उत्तर प्रदेश में औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष (गाजीपुर जिले के विशेष संदर्भ में 1764 ई0 से 1947 ई0 तक)"

"Puravi Uttar Pradesh Mein Aupaniveshik Samrajyavad ke Viruddh Sangharsh (Ghazipur Jile ke Vishesh Sandarbh Mein 1764 AD Se 1947 AD Tak)"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN MEDIEVAL AND MODERN HISTORY

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

By

Name of the Candidate :- Shailendra Yadav

Enrollment No. :- 2300502

Under the Supervision of

Prof. Santosha Kumar

Faculty of Medieval and Modern History

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, (Sector-F), Phaphamau, Prayagraj - 211013

Shailendra yadav

सारांश

भारतीय इतिहास का आधुनिक युग बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना से माना जाता है, जिसका प्रारम्भ 1757 ई० के प्लासी के युद्धोपरान्त हुआ था। तत्कालिन बंगाल, बिहार और उड़ीसा से मिलकर बनता था और मुगल कालीन बंगाल सुबे की सीमा अवध सुबे के पूर्वी सीमा से लगती थी। इसी सीमा पर 1764 ई० में बक्सर का युद्ध लड़ा गया, इस युद्ध में बंगाल का अपदस्थ नवाब, मुगल बादशाह और अवध के नवाब तीनों की सेनाएं ब्रिटिश ईष्ट इंडिया कम्पनी की सेना जिसमें यूरोपीय व भारतीय सिपाही सम्मिलित थे, से निर्णायक रुप से पराजित हो गये। इस पराजय के फलस्वरुप दिल्ली की गद्दी और भारत देश का संसाधन ब्रिटिश औपनिवेश बन गया। इस औपनिवेशिक साम्राज्यवाद जिसके शीर्ष पर ब्रिटिश संसद का अधिकार था, ने भारत की परम्परागत राजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, समाजव्यवस्था पर क्रमिक रुप से अपना प्रभाव स्थापित कर औपनिवेशिक प्रणाली के माध्यम से अपने मातृदेश को अत्याधिक लाभ पहुँचाने का प्रक्रम प्रारम्भ किया। इसकी भारत में व्यापक प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुयी, जो इतिहास में साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष का एक लम्बा इतिहास बनता है।

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव इसी औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष को वैज्ञानिक विधि से समझने का प्रयास है। जो अखिल भारतीय स्तर पर नहीं बल्कि उसी अवध और बंगाल की सीमा जिसे आधुनिक समय में पूर्वी उत्तर प्रदेश कहते हैं, के एक जिला गाजीपुर के विशेष संदर्भ में प्रस्तावित है।

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक विधि पर आधारित क्षेत्रीय इतिहास लेखन का जनआक्रोश पर केन्द्रित राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के कारण और परिणाम का अध्ययन करने का प्रयास है। आधुनिक भारतीय लोकतंत्र इसी संघर्ष से निर्मित है। अतः इस इतिहास का खण्ड दर खण्ड, जिला दर जिला अध्ययन महत्वपूर्ण है।

प्रमुख शब्द – साम्राज्यवाद, उपनिवेश, सुबा, यूरोपीय, पूर्वांचल, कम्पनी

Shailendra yadav

विषय–तालिका

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	1–2
2.	साहित्य समीक्षा	2
3.	शोध अध्ययन की सीमा	3
4.	शोध का उद्देश्य	3–4
5.	शोध कार्य विधि	4–5
6.	अध्ययन की आवश्यकता	5
7.	शोध का महत्व	6
8.	शोध परिकल्पना	6–7

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

साहित्यिक चोरी की रिपोर्ट

Shailendra Yadav

पूर्वी उत्तर प्रदेश में औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष (गाजीपुर जिले के विशेष संदर्भ में सन् 1764 ई0 से 1947 ई0 तक)

1. प्रस्तावना–पूर्वी उत्तर प्रदेश या पूर्वांचल कोई राजनैतिक या प्रशासनिक इकाई नहीं है। यह कोई विशेष भौगोलिक विविधता का क्षेत्र भी नहीं है। पूर्वी उत्तर प्रदेश एक सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का विशेष क्षेत्र है जो अपनी विशिष्ट भोजपुरी (हिन्दी की एक बोली) भाषा के लिए जाना जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश की भोजपुरी अवधी बघेली से भिन्न है ही साथ–साथ यह बिहार की बक्सर और शाहाबाद की भोजपुरी बोली से भी अलग है। यही बोली ही पूर्वी उत्तर प्रदेश या पूर्वांचल की शेष उत्तर प्रदेश से अलग पहचान है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रारम्भिक चरण में सन् 1757 ई0 के प्लासी युद्ध के मात्र 7 (सात) वर्ष पश्चात् आधुनिक भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युद्ध लड़ा गया जिसे बक्सर के युद्ध के नाम से जाना जाता है। बक्सर का युद्ध 22–23 अक्टूबर 1764 ई0 में ब्रिटिश ईष्ट इण्डिया कम्पनी और बंगाल के नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के एक संघ के साथ हुआ था। इस युद्ध में मीर कासिम का संघ बुरी तरह से पराजित हुआ साथ ही मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा जो पहले ही बदतर थी पूरी तरह समाप्त हो गई। बक्सर के युद्ध ने अंग्रेजों को उत्तर भारत की राजनीति या यू कहे भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का द्वार पूरी तरह से खोल दिया। गौर तलब है कि सम्पूर्ण भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को पूर्ण होने में इसके बाद भी लगभग 100 वर्ष लगे जो अंततः 1857 के महाविप्लव और उसके बाद क्रॉउन के शासन के साथ औपचारिक रूप से माना जा सकता है लेकिन साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष उसे 1764 ई0 के बक्सर के युद्ध से प्रारम्भ होने के कारण इसे एक विभाजन रेखा माना जा सकता है।

ब्रिटिश कम्पनी के द्वारा बक्सर युद्ध की सफलता के बाद जो राजनैतिक, आर्थिक संरचना में परिवर्तन का दौर प्रारम्भ हुआ उसी के साथ भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध असंतोष भी प्रारम्भ हुआ। ब्रिटिश साम्राज्यवादी कार्यप्रणाली भारतीय राजव्यवस्था (भारत की परम्परागत राजव्यवस्था) से सर्वथा भिन्न थी, भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में सत्ता परिवर्तन के साथ किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता था लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था ने भारत की इस स्थायी व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया।

इस ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग में एक विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध मुख्यतया इस असंतोष के

Shailendra Yadav

प्रतिफल (परिणाम) स्वरूप घटित विभिन्न घटनाओं को पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर गाजीपुर जनपद के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने का सचेत प्रयास है।

2. साहित्य समीक्षा–

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रसार, उसके विभिन्न चरण, उनके खिलाफ विभिन्न आन्दोलन, सशस्त्र विद्रोह, जन आन्दोलनो, किसान आन्दोलनों जनजातीय आन्दोलनों आदि पर विभिन्न विद्वानों और शोधर्थियों ने पर्याप्त कार्य किया है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में बलिया, वाराणसी, चन्दौली, आजमगढ़ जनपदों का ऐतिहासिक अध्ययन भी हो चुका है।

गाजीपुर जिले से सम्बन्धित ऐतिहासिक अध्ययन हालांकि अभी तक नहीं किया जा सका है जबकि गाजीपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक महत्व का क्षेत्र रहा है। ब्रिटिश कालीन अफीम फैक्टरी, लार्ड कार्नवालिस का मकबरा, जौनपुर तथा लखनऊ के लिए जलमार्ग गाजीपुर से ही सम्भव था। अतः गाजीपुर का साम्राज्यवाद के उद्‌भव और अवशान तक का अध्ययन क्षेत्रीय इतिहास लेखन में अवश्य ही महत्वपूर्ण होगा।

प्रस्तुत शोध संक्षेपिका के दृष्टिगत सम्बंधित साहित्य की खोज के क्रम में निम्नलिखित शोध प्रबंधो का अध्ययन किया गया है।

• चौधरी, एस0बी0 (1955) सिविल डिस्टर्वेन्सेस ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल इन इण्डिया (1765–1857), कलकत्ताः पुन्थी पुस्तक।

• चन्द्र, बिपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियण्ट ब्लैकस्वान, 2009।

• सावरकर, वी0डी0, द इण्डियन वार ऑफ इन्डेपेनडेंस, (1909) सेठानी कम्पनी बाम्बे।

• अबुल आजाद, इण्डिया विंस फ्रिडिमः एन आटोबायोग्राफीकल नरेटिव 2007 ओरियंट ब्लैकस्वान।

• 'गाजीपुर की ऐतिहासिक धारा', तिवारी, सरयू, स्नातकोत्तर महाविद्यालय परिवार, विवि0 प्रकाशन, गाजीपुर, उ0प्र0, वाराणसी, 1999

इन सभी शोध प्रबंधों में आंशिक रूप से गाजीपुर के इतिहास को स्पर्श किया गया है क्योंकि उनके अध्ययन की सीमा अलग–अलग है। वाराणसी और उसके पड़ोसी जिले में अन्वेषण 1857 ई० का विद्रोह भी मात्र एक घटना तक ही इतिहास का अन्वेषण करता है। लोक संस्कृति के अध्याय में लोक अभिव्यक्ति के वाराणसी (काशी) के ही लोक संस्कृ ति का अध्ययन किया गया है जबकि संस्कृति अपने आस–पास को भी प्रभावित करती है, और उससे प्रभावित भी होती है।

Shailendra Yadav

3. शोध अध्ययन की सीमा–

इतिहास विषय में क्षेत्र का निर्धारण (सीमांकन) एक कठिन कार्य है। इतिहास में काल निर्धारण, मुख्यतः आधुनिक काल में निश्चित हो जाता है परन्तु घट रही घटनाओं तथा परिवर्तनो के कारण–कार्य का निर्धारण अत्यधिक कठिन है क्योंकि विभिन्न घटनाएं आस–पास से प्रभावित न होकर वैश्विक प्रकृति की होती है। फिर भी प्रस्तुत शोध पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर गाजीपुर जनपद की वर्तमान सीमा के अनुरूप ही प्रस्तुत किया जाना सुनिश्चित है।

वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश किसी प्रकार की राजनैतिक, प्रशासनिक या भौगोलिक विभाजन की इकाई नही है परन्तु गाजीपुर जनपद ऐतिहासिक रूप से सैयद मसूद गाजी द्वारा 1330 ई0 में बसाया गया जिसमें वर्तमान समय का आंशिक आजमगढ़, मऊ, बलिया (सम्पूर्ण) छपरा, बक्सर का चौसा, चन्दौली और वाराणसी का भी कुछ हिस्सा शामिल था। ब्रिटिश काल में 1818 ई0 में यह एक पृथक जनपदीय इकाई के रूप स्थापित किया गया। 1 नवम्बर सन् 1879 ई0 से इससे बलिया को अलग किया गया था। अर्थात् आधुनिक गाजीपर जिला मेरे अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र है। यथा सम्भव शोध कार्य इस जिला के ही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तावित है। शोध कार्य समय तथा परिक्षेत्र के साथ–साथ साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष को ही अध्ययन के केन्द्र में रखा जायेगा।

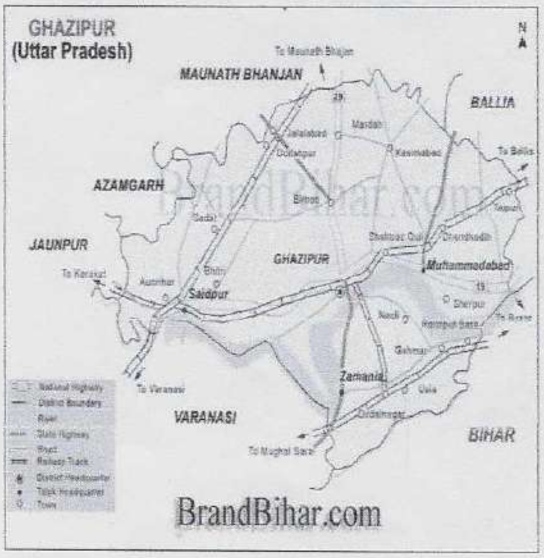

4. शोध का उद्देश्य–

ऐतिहासिक अध्ययन तात्कालिक रूप से किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति प्रायः नहीं करता है। फिर भी चूँकि वर्तमान उसी अतीत की बुनियाद पर खड़ा रहता है और भविष्य का आधार भी होता है अतः प्रस्तुत शोध भी इतिहास की इसी कड़ी का एक भाग है। यह शोध प्रबंध अपने शीर्षक अनुरूप निम्न उद्देश्य रखता है।

Shailendra Yadav

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश में साम्राज्यवाद के विस्तार का अध्ययन करना।

2. ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष का अध्ययन करना।

3. साम्राज्यवाद विस्तार और उसके विरूद्ध संघर्ष में सम्मिलित सभी प्रमुख व्यक्तियों, संस्थाओं, स्थलों आदि की पहचान करना।

4. शोध सीमा अन्तर्गत महत्वपूर्ण स्थलों का आधुनिक स्वरूप का अध्ययन करना।

5. प्रस्तुत अध्ययन के क्रम में महत्वपूर्ण व्यक्तियों, स्थानों के साथ दूसरी पक्ति के व्यक्तियों तथा स्थानों की पहचान व अध्ययन शोध का उद्देश्य होगा।

6. मिथको का तत्थो से तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शोध कार्य विधि

शोध की पद्धति घटनोत्तर, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक शोध विधि पर आधारित होगी। शोध एक आयामी न होकर बहुआयामी होगा। यथास्थान चित्रों, आकड़ों आदि का समावेश भी शोध का अंग होगा।

शोध प्रबंध को यथासम्भव प्रमाणिक साधनों के माध्यम से सम्पंन करने पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। गुढ और अस्पष्ट अवधारणा के लिए यथासम्भव विषय विशेषज्ञों का सहयोग और मार्गदर्शन अनुसंधान कार्य में आवश्यक और महत्वपूर्ण संशाधन के रूप में प्रयोग किया जाना स्वाभाविक है।

प्रथम अध्याय अनुसंधान विषय की भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व्यापक रूप से प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास पर आधारित होगा। भौगोलिक स्वरूप के अन्तर्गत शोध सीमा का भौगोलिक अध्ययन जलवायु, मिट्टी, नदियां प्राकृतिक और मानव जनित संशाधनों का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के स्वरूप एवं उनकी कार्यप्रणाली का अध्ययन वैश्विक और स्थानीय दोनों आधार पर किया जायेगा। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जायेगा।

तृतीय अध्याय सम्पूर्ण शोध का हृदय बिंदु होगा चूँकि घटनाएं क्रिया प्रतिक्रिया का कारण हो सकती है, लेकिन विचार और सामाजिक मानसिक परिवर्तन की घटना एक लम्बे आन्तरिक चेतना का प्रतिफल होते है। वैचारिक पृष्ठ भूमि के अन्तर्गत विभिन्न समाज सुधार, धर्म सुधार, शिक्षा का प्रचार–प्रसार, आर्थिक संगठनों, किसान आन्दोलनों, लोक कलाओं मनोरंजन के साधनों रंग मंच, राजनैतिक सुधार कायक्रमों आदि का अध्ययन किया जाना है। साथ ही इसी

Shailendra yadav

अध्याय में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा ब्रिटिश संसद से बनाये गये विभिन्न नियमों, विनियमो तथा अधिनियमों का व्यापक परीक्षण करना प्रस्तावित है।

चतुर्थ अध्याय 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का गाजीपुर जिले के साथ–साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा सम्पूर्ण भारत पर आधारित अध्ययन अपेक्षित रहेगा ताकि उसकी व्यापक समझ विकसित हो सके।

पंचम अध्याय इस अध्याय में 1857 ई0 की क्रान्ति के बाद 1858 ई0 में ब्रिटिश क्राउन के प्रत्यक्ष नियंत्रणाधीन गाजीपुर जिले के अन्तर्गत विभिन्न संगठनों कांग्रेस कमेटी, किसान समितियों, आदि के द्वारा साम्राज्य विरोध के विभिन्न चरणों यथा वंगभंग विरोध, खिलाफत आन्दोलन, रौलेक्ट, नमक सत्याग्रह आदि आन्दोलनों के दौरान गाजीपुर जनपद में लोक प्रतिरोध के स्वरूप का अध्ययन किया जायेगा।

षष्ठम् अध्याय में 1942 ई0 की स्वतः स्फूर्त जनक्रान्ति एवं गाजीपुर में लोक प्रतिरोध का भी व्यापक और विषय केन्द्रित अध्ययन किया जायेगा। यह अपने आप में महत्वपूर्ण अध्याय होगा क्योंकि भारत वर्ष का वर्तमान निर्विवाद रूप से इसी क्रान्ति का परिणाम है।

सप्तम् अध्याय निष्कर्ष सम्पूर्ण शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत करने के साथ–साथ भविष्य का ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का माध्यम भी होगा।

6. अध्ययन की आवश्यकता–

प्रस्तुत शोध–विषय पर अलग–अलग कार्य किये गये है। समेकित रूप से ब्रिटिश साम्राज्यवाद का प्रसार और उसके विरूद्ध संघर्ष का ऐतिहासिक अध्ययन शोध सीमा के अन्तर्गत अभी भी मेरी जानकारी में नहीं किया गया है। शोध क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर गाजीपुर बक्सर युद्ध (1764 ई0) के उपरान्त तत्काल ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर आ गया था। अतः इस जिले का व्यवस्थित अध्ययन अतिआवश्यक है। गाजीपुर जिला अन्तर्गत ही एशिया की सबसे बड़ी छारोद (अफ़ीम) कारखाना, 1820 ई0 में स्थापित किया गया था। इसके साथ–साथ गुलाबजल, केवड़ा तथा नील की खेती इस जिले के परम्परागत उत्पाद भी इस जिले के महत्व को रेखांकित करते है। ब्रिटिश गवर्नर लार्ड कार्नवालिस का मकबरा, आधुनिक जमानियाँ कस्बे के अशोक स्तम्भ (लाट) मौर्यकाल तथा गुप्तकालीन भीतरी अभिलेख जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विरासत के कारण जिले का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन करना आवश्यक है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष में यह जनपद हर समय अपना योगदान देता रहा है अतः इस जनपद का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन समय की माँग है। व्यवस्थित व क्रमबद्ध अध्ययन के अभाव में इतिहास में विकृति आ जाती है। अतः शोध कार्य आवश्यक है।

Shailendra Yadav

7. शोध का महत्व–

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव का महत्व मोटे तौर पर ब्रिटिश साम्राज्य अन्तर्गत गाजीपुर जिले का साम्राज्य के अन्दर क्या महत्व था से प्रारम्भ होगा, शोध की आवश्यकता अध्याय में गाजीपुर की धरोहरों पर प्रकाश डाला गया है, जो इस शोध की आवश्यकता एवं महत्व दोनों के लिए उत्तरदायी कारण हो सकता है।

ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध संघर्ष में यह जनपद तथा यहाँ के निवासी बढ़–चढ़कर अपना योगदान देते है अतः उन महान बलिदानियों को तथा उनके त्याग की कहानियों को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने में प्रस्तुत शोध महत्वपूर्ण हो सकता है। शोध का महत्व संक्षेप में निम्नलिखित है–

1. प्रस्तुत शोध प्रबंध भविष्य में नये शोध के लिए आधार का कार्य करेगा।
2. युवा पीढ़ी को गलत और भ्रामक जानकारी से बचाने में महत्वपूर्ण होगा।
3. क्षेत्रीय इतिहास लेखन के अन्तराल को भरने में सहायक होगा।
4. अनेक नेताओं और उनके इतिहास को विश्व पटल पर सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण होगा।
5. साम्राज्यवाद विस्तार और उसके विरूद्ध संघर्ष के इतिहास लेखन में अपनाये गये सामान्यीकृत सिद्धान्तों की पुष्टि करने में भी शोध महत्वपूर्ण कार्य करेगा।

8. शोध परिकल्पनाः–

ऐतिहासिक शोध में परिकल्पना उतना महत्वपूर्ण नही है, क्योंकि इतिहास पर शोधार्थी का कोई नियंत्रण नही होता है शोधार्थी के पास तो उसके कुछ साक्ष्य मात्र होते है जिनकी रोशनी में वह अपने प्रश्नों का हल ढूँढ़ने का उपक्रम करता है। राग–द्वेष से मुक्त होकर इतिहास में तथ्यों की खोज व व्याख्या शोधार्थी के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि अपरिहार्य है। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के मन में प्रस्तुत काल खण्ड की एक ऐसी तस्वीर उभरती है जैसे वह स्वयं इस इतिहास का कोई पात्र होता तो ऐसा करता, या ऐसा नहीं होने देता, लेकिन वह कैसे यह कर पाता? अनेक बार मन में ऐसे विचार आते है। यही इतिहास की विश्वसनीयता के लिए एक चुनौती है। जिससे शोधार्थी को सावधान रहना होता है।

प्रस्तुत शोध के क्रम में शोधार्थी के मन में प्रस्तुत काल खण्ड की सामाजिक, राजनितिक और आर्थिक गतिविधि को जानने समझने की परिकल्पना उत्पन्न होती है तथा साथ–साथ ब्रिटिश कार्यप्रणाली की परिकल्पना प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर बनती बिगड़ती रही है।

Shailendra yadav

परिकल्पना का मुख्य केन्द्र साम्राज्यवाद का विस्तार क्यो और कैसे हुआ तथा एक राजनीति कैसे अपने लिए विरोध का ऐसा वातावरण बना लेता है कि सम्पूर्ण साम्राज्य की जनता ही उसके विरूद्ध खड़ी हो जाती है? वह भी तब जबकि साम्राज्यवादी सत्ता सभ्यता और संस्कृति में श्रेष्ठतम् होने का दावा कर रही हो! और अपने साम्राज्य का उद्देश्य असभ्य को सभ्य बनाने के लिए रखता हो, सामाजिक सांस्कृतिक के साथ स्थायी राजनीति, विधि का शासन, आर्थिक रूप से विष्व की श्रेष्ठ प्रणाली के कर्ता–धर्ता भारत में ऐसा क्या कर दिये कि सम्पूर्ण समाज ही उसके विरूद्ध खड़ा हो गया। प्रस्तुत शोध की परिकल्पना यही है, क्योंकि परिणाम तो पहले ही सामने आ चुका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सचिवालय रिकार्ड रूम लखनऊ।
- उ०प्र० अभिलेखागार, लखनऊ।
- डंकन रिकार्ड वस्ता 1 से 19 तक 105 वाल्यूम ।
- रेलिटिंग टू आजमगढ़, 67 वाल्यूम ।
- राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
- फॉरेन डिर्पाटमेन्ट पोलिटिकल कन्सल्टेशन 1857–1933
- डिस्ट्रिक्ट कलेक्ट्रेट रिकार्ड रूम, गाजीपुर।
- डिस्ट्रिक्ट जज रिकार्ड रूम, गाजीपुर।
- इरविन विलियम रिर्पोट ऑन दी रिविजन ऑफ रिकार्डस् एण्ड सेटिलमेन्ट आपरेशनस् इन दी गाजीपुर डिस्ट्रीक्ट, 1880–85, इलाहाबाद, 1886।
- ओल्डहम विल्सन्– हिस्टोरिकल एण्ड स्टेटीकल मेमायर ऑफ दी गाजीपुर, डिस्ट्रीक्ट, भाग–दो, इलाहाबाद, 1876।
- मिश्र, कमला प्रसाद, बनारस इन ट्रांजिसन, 1738–1795, नई दिल्ली 1975।
- राय, राजेन्द्र स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्वी उ०प्र० का योगदान, अनिल प्रकाशन, खलीलाबाद, बस्ती, 1987।
- ए०एस० अल्टेकर – बनारस पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट, 1937 ।
- ए०बी० हण्टर, विलियम विल्सन (1908)। भारत का रायल गजेटियर। द बारह ऑक्सफोर्ड, क्लेरेण्डन प्रेस, पृष्ठ– 2030–2031।
- ए० बी० सी० डी०..................................जेड0 नेविल लाइब्रेरी । आगरा और अवध संयुक्त प्रान्तों के जिला गजेटियर का खण्ड XXIX सरकारी प्रेस इलाहाबाद।

Shailendra yadav

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	shailendra yadav
Title	"Puravi Uttar Pradesh Mein Aupaniveshik Samrajyavad ke Viruddh Sangharsh (Ghazipur Jile ke Vishesh Sandarbh Mein 1764 AD Se 1947 AD Tak)"
Paper/Submission ID	3593212
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-08 11:49:22
Total Pages, Total Words	11, 2925
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **5 %**

Sources Type

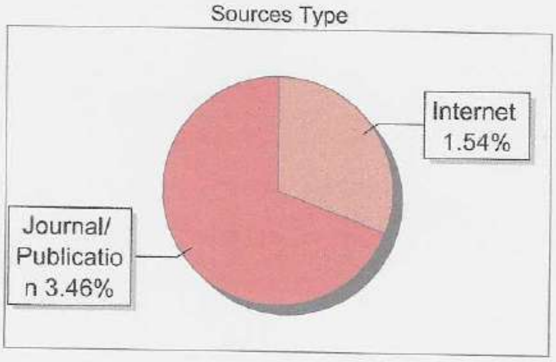

Report Content

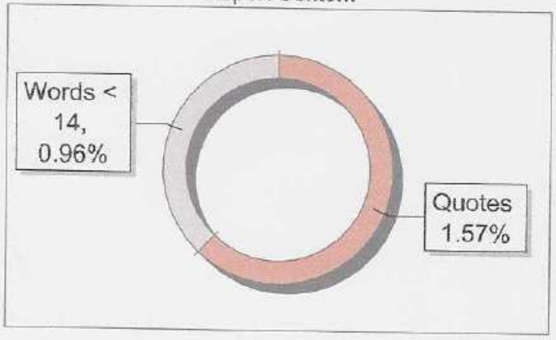

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	0 %
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

shailendra yadav

DrillBit

DrillBit Similarity Report

SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	
5	4	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis submitted to shodhganga - shodhganga.inflibnet.ac.in	2	Publication
2	www.slideshare.net	1	Internet Data
3	www.du.ac.in	1	Publication
4	pdfcookie.com	<1	Internet Data

Shailendra yadav